3 यूहन्ना

यूहन्ना द्वारा लिखा गया तीसरा पत्र

लेखकः

यीशु के बारह चेलों में से एक था।

समयः

उसने इसे 85 से 95 ईस्वी की अवधि में लिखा होगा।

विषयः

इस में तीन व्यक्तियों के बारे में है।

गयुसः यह यहून्ना का अच्छा दोस्त था।

दिओत्रेफेसः जिसने स्वयं को ऊपर उठाना चाहा और यूहन्ना का विरोध किया।

देमेत्रियुसः जिसने सत्य की साक्षी दी। यीषु के मानने वालों को चाहिए कि वे दिआत्रेफेस के जीवन को अपना नमूना न बनाएं। उन्हें गयूस और देमेत्रियुस के समान जीवन जीना चाहिए।

1मुझ प्राचीन की ओर से अति प्रिय गयुस
को जिसे मैं दिल से चाहता हूँ।
2प्रिय दोस्त, सब बातों से बढ़कर मैं
यह चाहता हूँ कि जैसे तुम्हारी आत्मिक
तरक्की हो रही है, तुम सभी दायरों में और
स्वास्थ्य में भी तरक्की करते जाओ। 3मुझे
उस समय बड़ी खुशी हुई जब भाईयों ने
आकर इस सच्चाई के बारे में बताया जो
तुम में है और यह भी कि उसी सच्चाई में
तुम बने रहते हो। 4मुझे इस बात से बढ़कर
और किसी बात में खुशी नहीं होती है कि
मेरे बच्चे सच्चाई के साथ जीवन बिता रहे हैं।
5प्रिय दोस्त, भाईयों और अपरिचित
लोगों के लिए जो कुछ तुम करते हो, वह
सब ईमानदारी से करते हो। 6मसीही लोगों
(चर्च) के सामने उन लोगों ने तुम्हारे प्रेम
की गवाही दी है। यदि तुम उनकी आगे की
यात्रा में उनकी मदद कर सको, तो अच्छा
होगा। 7इसलिए कि यीशु के नाम की खातिर
वे निकल पड़े हैं और अविश्वासियों से
कुछ मदद नहीं लेते हैं। 8इसलिए हमें ऐसे
लोगों का स्वागत करना चाहिए, ताकि
सत्य के फैलाने में मददगार हों।
9मैंने वहाँ के लोगों (चर्च) को लिखा है,
लेकिन दियुत्रिफ़ुस जो उन सब में अपने
आपको ऊँचा करना माँगता है, हमें अपनाने
के लिए तैयार नहीं है। 10इसलिए मेरे आने
पर मैं उसके कामों को याद कराऊँगा जो

1:1बुजुर्ग अगुवे - 2 यूहन्ना 1.

"गयुस" - प्रेरितों के काम नाम की किताब और पौलुस की चिट्ठियों में ऐसे तीन व्यक्ति हैं, जिनके नाम गयुस हैं (प्रे.काम 19:29)।

"दिल"- 2 यूहन्ना 1.

1:2 गयुस अपने आत्मिक जीवन में तरक्की कर रहा था। लेकिन ऐसा लगता है कि दूसरी बातों में वह तमाम मुश्किलों का सामना कर रहा था। शायद इसी वजह से उसकी सेहत खराब हो रही थी। इस में कोई शक नहीं कि यूहन्ना यह देख सका, कि गयुस की खास जरूरत क्या थी।

1:3 "खुशी हुई"- 2 यूहन्ना 4 "भाइयो" मसीह पर विश्वास करने वाले लोग "सच्चाई मे तुम बने" परमेश्वर द्वारा प्रगट की गयी सच्चाई के बारे में गयुस वफ़ादार था। उसने सच्चाई को कबूल किया और उसमें बना भी रहा।

"सच्चाई"- 2 यूहन्ना 4.

1:4 "मेरे बच्चे"- जो लोग उसके सिखाने पर ईश्वरीय बातें सिखाया करता था। 1 तीमु. 1:2 से तुलना करें।

1:5 ईमानदारी से - परमेश्वरीय सच्चाई के प्रति ईमानदारी की वजह से वह यीशु के सेवकों की मदद जैसे भी कर सका, उसने की। जो कुछ उसने सीखा, उसका अभ्यास भी किया - यह हम सभी के लिए सीखने की बात है।

1:6 प्रेम - प्रेम को व्यवहारिक तौर पर दिखाना - 1 यूहन्ना 3:16-18.

"आगे की यात्रा में"- यूहन्ना उन भ्रमणकारी लोगों के विषय कह रहा है, जो एक जगह से दूसरी जगह जाकर यीशु के बारे में सिखाते हैं। जब इन लोगों को दूसरी जगह जाना होता था, गयुस उनके पैसे का इन्तज़ाम करता था।

"तो अच्छा होगा"- स्थानीय चर्च को खुश की खबर सुनाने वालों की इस तरह मदद करनी चाहिए, जो प्रभु यीशु को पसंद है।

1:7-8 "यीशु के नाम की खातिर"- ये लोग अपने किसी फ़ायदे या नाम के लिए इस काम पर नहीं निकले थे, लेकिन मसीह के काम के लिए "दूसरे लोगों" (गैरमसीही) साफ़ ज़ाहिर है कि यहूदियों को छोड़ दूसरे अन्य लोगों में वे काम कर रहे थे। इन लोगों ने मसीह पर भरोसा किया और निकल पड़े। यदि चर्च के लोगों ने उनकी मदद न की होती तो उन्हें बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ता।

1:8 "सत्य के फैलाने में मददगार"- सभी यीशु पर ईमान लाने वाले इस सच्चाई को दूसरों तक ले जाने वाले नहीं बन सकते हैं, लेकिन जो यह काम कर रहे हैं, उनकी मदद कर सकते हैं। इस दुनिया में सभी जगह मसीह का संदेश पहुँचे, यह हम सभी की ज़िम्मेदारी है।

1:9 "दियुत्रिफ़ुस"- यह एक ऐसा आदमी था जो बहुत उग्र या और अपने आपको आगे करता था। यूहन्ना की सुनने को तैयार नहीं था। वह चर्च में ऊँचा स्थान चाहता था, कि सब उसी की सुनें। आज भी ऐसे लोग चर्च में है। हमें उन्हें परख लेना चाहिए जो खुद को आगे लाना चाहते हैं।

वह बुरे शब्दों के साथ हमारे खिलाफ़ करता है। वह इतने में ही सन्तुष्ट नहीं रहता है, परन्तु वह तो स्वयं भी भाईयों का स्वागत नहीं करता और न ही करने वालों को करने देता है, बल्कि उन्हें चर्च से बाहर कर देता है।

11प्रिय दोस्त, बुरा नहीं, लेकिन भला करो। जो भला करता है, वह परमेश्वर की ओर से है, लेकिन जो बुरा करता है उसने परमेश्वर का अनुभव नहीं किया है।

12देमेत्रियुस की सभी बड़ाई करते हैं और हाँ, हम भी उसके गवाह हैं। तुम्हें मालूम भी है कि हमारी गवाही सच है।

13मुझे तुमको काफ़ी कुछ लिखना था, लेकिन पेन और स्याही से नहीं लिखना चाहता। 14मेरी आशा है कि मैं जल्दी ही तुम से मिलूँगा और आमने-सामने हमारी बातचीत होगी। तुम्हें शान्ति मिले। हमारे मित्र तुम्हें सलाम कहते हैं। तुम भी नाम लेकर वहाँ के मित्रों को सलाम करो।

1:10 "बुरे शब्दों"- कुछ लोग सोचते हैं कि रुकावट बनने का तरीका है - दूसरों को नीचा करना दूसरों के नाम को नीचा कर के वे बेकार में अपने नाम को ऊँचा करने की कल्पना करते हैं।

"करता है"- एक ही बार नहीं, लेकिन लगातार

"चर्च से बाहर"- न ही वह केवल क्रूस की सच्चाई बताने वालों की मदद करने में दिलचस्पी लेता है, वह उनको भी मना करता है जो मदद करना चाहते हैं। क्या उसे ऐसा लगता था कि उसके नाम और इज़्ज़त को इन लोगों से खतरा था?

1:11 "भला करता"- 1 कुरि. 4:16; इफ़ि. 5:1; 1 थिस्स. 1:6; 2:14; इब्रा. 6:12; 13:7.

"जो...है"- या परमेश्वर की निगाह में जो भला है, वही करता है - 1 यूहन्ना 3:7-10. हर वह बात जिसे इन्सान भला समझता है, परमेश्वर की दृष्टि में भली नहीं है (लूका 16:15)।

1:12 "सच"- दूसरे शब्दों में वह सही करता है इसलिए बाईबल की शिक्षा के आधार पर वह भला इन्सान था। हम क्या करते हैं, उसके आधार पर बाईबल बतलाती है कि हम क्या हैं।